Issue-07/Vol-22/March 2019
ISSN No. 2319 - 5908
An International Multidisciplinary Refereed Research Quarterly Journal

# शोध संदर्श

# SHODH SANDARSH

शिक्षा, साहित्य, इतिहास, कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य आदि

Chief Editor :
Dr. V.K. Pandey

Editor :
Dr. V.K. Mishra
Dr. V.P. Tiwari

UGC Approved Journal
No.-41329

SCIENTIFIC JOURNAL IMPACT FACTOR
SJIF
No. 4.713

GENERAL IMPACT FACTOR
GIF
No. 1.4293

विविध ज्ञान - विज्ञान - विषय का मन्थन एवं विमर्श ।
नव - उन्मेषी दशा - दिशा से भरा 'शोध - सन्दर्श' ।।

- दुष्यन्त कुमार की कविताओं में देश की दशा पर व्यथा –उमाकान्त 92-97
- प्रेमचन्द की स्त्री दृष्टि –डॉ. उदय नारायण राय एवं योगेन्द्र कुमार यादव 98-99
- रामकाव्य परम्परा एवं सूरदास –डॉ. अनीश 100-103
- महीप सिंह की कहानियों में चित्रित पति-पत्नी सम्बन्ध 'मेरी प्रिय कहानियाँ' कथा-संग्रह के विशेष संदर्भ में –डॉ. प्रवीण कुमार न. चौगुले 104-107
- महँगाई का विकराल रूप : 'बाबूजी' –डॉ. श्रीकांत पाटील 108-109
- प्राचीन काल में स्त्री-दृष्टि –धर्मेन्द्र 110-116
- डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर की दृष्टि में स्त्री-मुक्ति –डॉ. संतोष राजपाल नागुर 117-119
- मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में प्रमुख नारी पात्र : स्त्री विमर्श के सम्बन्ध में –डॉ. (श्रीमती) बीना मथेला एवं हिमांशी बिष्ट 120-124
- रामलीला का उद्भव एवं विकास– अमिता सिंह 125-127
- सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और निर्मल वर्मा –नर नारायण 'शास्त्री' 128-131
- समकालीन स्त्री लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी चेतना के विविध रूप –दीपक कुमार 132-135
- साक्षात्कार- डॉ. परशुराम शुक्ल की आनन्द बक्षी से बातचीत 136-140
- साहित्य में लोक जीवन, अर्थ अवधारणा और अभिव्यक्ति –रंजना 141-144
- मुक्तिबोध का कवि व्यक्तित्व एवं प्रयोगधर्मिता –पंकज कुमार मिश्र 145-148
- प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी संघर्ष –प्रो. वसुंधरा उदयसिंह जाधव 149-151
- 'यमदीप' उपन्यास में विन्यस्त थर्ड जेन्डर के जीवन का यथार्थ : औपन्यासिक अन्तर्वस्तु और प्रत्यक्ष अनुभव –दिनेश कुमार 152-159
- हिन्दी का वैश्विक फलक और उसकी चुनौतियाँ –हरिओम कुमार द्विवेदी 160-161
- घनानन्द के काव्य में भक्ति तत्व –सुन्दरम् शर्मा 162-164
- छायावादी कविता में जागरण के स्वर –डॉ. देवर्षि कुमार मिश्र 165-170
- 'बिना दीवारों के घर' नाटक में चित्रित पारिवारिक विखराव –प्रो. रगड़े पी. आर. 171-173
- मोहन राकेश के नाटकों की संवाद योजना –जयराम गाडेकर 174-178
- आदिवासी लोक संस्कृति –डॉ. राजेन्द्र सोमा घोडे 179-182
- गुरु गोविन्द सिंह की वाणी का दार्शनिक पक्ष –केवल कुमार 183-189
- निर्मल वर्मा की कहानियों का एक अनुशीलन –भागेश देवन 190-195
- थारू लोकगीत : एक समृद्ध विरासत –दिवाकर राय 196-199
- तुलसी एवं केशव का साहित्य को अवदान –डॉ. शाहिदा परवीन 200-202
- 'रसप्रिया' में आंचलिक संवेदना तथा सांस्कृतिक चेतना की जीवंतता –डॉ. काले लक्ष्मण तुलसीराम 203-205
- वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में समकालीन हिन्दी कविता –प्रा. डॉ. संतोष विजय येरावार 206-209
- अमरकान्त की कहानियों में सांस्कृतिक परिदृश्य –प्रो. स्मिता चतुर्वेदी एवं सतेंद्र बहादुर सिंह 210-214
- भारतीय चेतना और निराला का काव्य –शशिभूषण सिंह 215-217
- आधुनिक हिन्दी कहानी में अभिव्यंजित लोकतांत्रिक चेतना –अमित कुमार ओझा 218-222

(U.G.C. Approved Journal No. : 41329) ISSN No. - 2319–5908

**Hindi :** Shodh Sandarsh-VII, Vol.-XXII, March-2019, Page : 136-140

General Impact Factor : 1.4293, Scientific Journal Impact Factor : 4.713

# साक्षात्कार

## *डॉ. परशुराम शुक्ल की आनन्द बक्षी से बातचीत*

वरिष्ठ बाल साहित्यकार परशुराम शुक्ल हिन्दी बाल साहित्य के सक्षम हस्ताक्षर हैं। परशुराम शुक्ल का अब तक 150 से अधिक पुस्तकें और लगभग 6000 स्फुट रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। जिसमें दो कोश ग्रन्थ भी हैं। आपकी अनेक रचनाओं का भारत की विभिन्न शाखाओं में अनुवाद हुआ है।

**प्रश्न** : आदरणीय शुक्ल जी, आपका जन्म कब और कहाँ हुआ, कृपया अपने परिवार के बारे में संक्षेप में बताइये?

**डॉ. शुक्ल** : मेरा जन्म 6 जून, 1947 को सैबसू नामक ग्राम में हुआ था। यह ग्राम मेरे दादा पण्डित जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल इटावा (उत्तर प्रदेश) के छपेटी नाम स्थान पर रहते थे। उनके विषय में मुझे कोई जानकारी नहीं है। बस, केवल इतना मालूम है कि वह हमेशा अपने नाम में 'ग' के स्थान पर 'ज' पर बिन्दु लगाते थे। इससे उनका नाम जंगनाथ हो जाता था। मेरी ननिहाल सैबसू उस समय एक बहुत छोटा-सा गाँव था। नानाजी की मृत्यु मेरे जन्म के पहले हो गई थी। मेरे दो मामा थे–श्री मंगूलाल तिवारी और श्री पुत्तनलाल तिवारी। दोनों का स्वर्गवास हो चुका है।

**प्रश्न** : आपने अभी जो जानकारी दी उस पर से आपकी परिवरिश में माता-पिता का निश्चित रूप से बड़ा योगदान रहा है। इस सम्बन्ध में आप कुछ कहना चाहेंगे?

**डॉ. शुक्ल** : अवश्य। आज मैं जो भी हूँ, वह मेरे माता-पिता का आशीर्वाद का फल है। मेरी माँ श्रीमती रामश्री देवी बड़ी नेक, सरल और धार्मिक विचारों की थीं। मैं उन्हें अम्मा कहता था। उन्हें कानपुर शहर बहुत पसन्द था। अम्मा प्रतिदिन प्रातःकाल गंगा स्नान करने जाती थीं और शाम को तपेश्वरी देवी के दर्शन करती थीं।

मेरे पिता मंगली प्रसाद शुक्ल बड़े कठोर स्वभाव के और अनुशासनप्रिय थे। मैं उनसे बहुत डरता था, किन्तु उनका बहुत सम्मान करता था और उन्हें दादा कहता था। मुझे आज भी जब अम्मा और दादा की याद आती है तो आँखें नम हो जाती हैं।

**प्रश्न** : शुक्ल जी ! आपके बचपन के कुछ मित्र भी होंगे। इनके बारे में कुछ बताइये।

**डॉ. शुक्ल** : कानपुर में मेरे तीन मित्र थे–गोपाल, टिल्लू और कमलाकान्त। गोपाल ने बड़े होकर मेडिकल स्टोर खोला और कापियाँ बनाने का एक कारखाना आरम्भ किया। चिल्लू ने कोई विशेष प्रगति नहीं की। कमलाकान्त ने स्टेशनरी का व्यवसाय आरम्भ किया और पर्याप्त सफलता प्राप्त की।

**प्रश्न** : कृपया अपनी प्राथमिक शिक्षा के सम्बन्ध में बताइये। आपके समय में प्राथमिक शिक्षा कैसी थी?

**डॉ. शुक्ल** : मेरी शिक्षा कानपुर के सदर बाजार जूनियर हाईस्कूल से प्रारम्भ हुई। यहाँ मैंने कक्षा 8 तक अध्ययन किया। उस समय बच्चे लकड़ी की पट्टी पर चाक के घोल से लिखते थे। लकड़ी की कलम का उपयोग किया जाता था। आगे चलकर कापियों और स्याही से लिखने वाले होल्डरों का उपयोग आरम्भ हो जाता था।

मेरे समय पर स्कूल बहुत कम थे। सामान्यजन शिक्षा का महत्व बहुत कम समझते थे। शिक्षक बच्चों की पिटाई करते थे। इसके साथ ही नैतिक विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता था। बच्चे अपने शिक्षकों का सम्मान करते थे।

**प्रश्न** : शुक्ल जी! जूनियर हाईस्कूल के बाद की शिक्षा कहाँ और कैसे परिवेश में हुई?

**डॉ. शुक्ल** : जूनियर हाईस्कूल अर्थात् कक्षा आठ उत्तीर्ण करने के बाद मैंने मारवाड़ी इण्टर कालेज में प्रवेश लिया। यहीं

से हाईस्कूल पास किया। इण्टरमीडिएट की परीक्षा दोसर वैश्य इण्टर कालेज से प्राइवेट छात्र के रूप में उत्तीर्ण की। सन् 1967 में मैंने क्राइस्ट चर्च कालेज में प्रेवश लिया तथा यहीं से 1969 में बी.ए. और 1971 में एम. ए. पास किया। इसी वर्ष क्राइस्ट चर्च कालेज के समाजशास्त्र विभाग में प्रवक्ता पद पर मेरी नियुक्ति हो गई।

**प्रश्न** : क्राइस्ट चर्च कालेज, कानपुर में भी आपके नये मित्र बने होंगे। कृपया इनके सम्बन्ध में अपने अनुभव बताइये।

**डॉ. शुक्ल** : यह मेरा आर्थिक संघर्ष का समय था। मैं कई बच्चों को पढ़ाता था। प्रातः 7 बजे से 11 बजे तक कालेज में रहने के बाद 11 बजे से शाम 6-7 बजे तक ट्यूशन करता था। कालेज में मेरा केवल एक मित्र बना– डारविन पी. बडन। बडन से गहरी मित्रता थी। आज भी है। वह पर्यावरण मंत्रालय, नई दिल्ली से निदेशक के पद से सेवानवृत्त होकर दिल्ली में ही बस गया।

**प्रश्न** : शुक्ल जी! क्या आप पाठ्येतर कार्यक्रमों में भी भाग लेते थे?

**डॉ. शुक्ल** : नहीं। जैसा मैंने अभी-अभी बताया कि मेरे पास समय की कमी थी, अतः मैं चाहकर भी पाठ्येत्तर कार्यक्रमों में भाग नहीं ले सकता था। हाँ, मुझे कहानी, कविता लिखने का शोक था। सर्वप्रथम मैंने एक कहानी लिखी– 'दहेज'। इसके बाद 4-5 और कहानियाँ लिखीं। कुछ कविताएँ भी लिखीं। धीरे-धीरे सब नष्ट हो गया। सन् 1974 में मैं बुन्देलखण्ड कॉलेज, झाँसी आ गया। इसी समय गुम हुई 'दहेज' मिल गई और कालेज पत्रिका में प्रकाशित भी हो गई। सम्भवतः प्रकाशित होने वाली यह मेरी पहली रचना थी।

**प्रश्न** : कृपया अपने विवाह और परिवार के सम्बन्ध में संक्षेप में जानकारी दीजिए।

**डॉ. शुक्ल** : मेरा विवाह बुन्देलखण्ड कालेज, झाँसी आने के बाद हुआ। मैं कामकाजी महिला, विशेष रूप से कालेज में अध्यापन का कार्य करने वाली महिला से विवाह करना चाहता था। सौभाग्य से मेरी इच्छा पूरी हो गई। 12 मई, 1979 को भोपाल के श्री अश्विनी कुमार तिवारी और श्रीमती प्रभा तिवारी की बेटी सुश्री विभा से मेरा विवाह हो गया। उस समय विभा जी कैरियर कॉलेज, भोपाल के हिन्दी विभाग में व्याख्याता थीं। मेरा परिवार बहुत छोटा है–मैं, विभा, बेटा अभिनंदन और बेटी अंशू। विभा जी का विषय हिन्दी साहित्य है। उन्होंने धर्मयुग के सम्पादक डॉ. धर्मवीर भारती पर शोधकार्य किया और पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। कुछ कविताएँ भी लिखीं, जो स्फूट रूप से पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं। इसके बाद शासकीय सेवा और पारिवारिक दायित्व के कारण उनका लेखन कार्य आगे नहीं बढ़ सका। बेटा अभिनंदन ने बी.ए. करने के बाद 'फिल्म एण्ड टेलीविजन इंस्टीट्यूट' पूना से फिल्म डायरेक्शन का कोर्स किया। वर्तमान में उसका अपना एन.जी.ओ. है। बेटी अंशू ने बचपन में बहुत सी बाल कविताएँ लिखीं। इनका पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन भी हुआ। सन् 1994 में मध्य प्रदेश शासन के आर्थिक अनुदान से उसकी बाल कविताओं की पुस्तक 'नाचे मोर मचाये शोर' विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुई। आगे चलकर अंशू सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनी और वर्तमान में सुखी पारिवारिक जीवन व्यतीत कर रही है।

**प्रश्न** : आपको लेखन की प्रेरणा कहाँ से और किस प्रकार प्राप्त हुई?

**डॉ. शुक्ल** : लेखक एक संवेदनशील प्राणी होता है। उसकी अवलोकन क्षमता भी सामान्य लोगों से अधिक होती है। सामान्य लोग जिन घटनाओं आदि पर ध्यान नहीं देते हैं, लेखक उन पर ध्यान देता है, गहराई तक अनुभव करता है और फिर थोड़ी बहुत कल्पना का सहारा लेकर प्रस्तुत करता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि लेखक को विशेष रूप से साहित्यकार को लेखन की प्रेरणा अपने आसपास से ही मिलती है। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ कानपुर में एक नवविवाहित को जलाकर मार दिया गया। समाचार पढ़ा। भीतर तक हिल गया। 'दहेज' कहानी की प्रेरणा इसी समाचार से मिली।

**प्रश्न** : शुक्ल जी! आपने किन-किन विषयों पर लिखा है और साहित्य की कौन-कौन सी विधाओं पर लेखनी चलाई है?

**डॉ. शुक्ल** : मैंने सामाजिक समस्या प्रधान कहानियाँ, आलेख, पुस्तक समीक्षाएँ, गीत, गज़ल आदि सभी कुछ लिखा है। इसके साथ ही पूर्व-अपराधी जनजातियों पर सामान्य आलेख, शोध आलेख भी लिखे। इन सबका प्रकाशन भी हुआ।

**प्रश्न** : आप सामान्य लेखन और जनजातियों से संबन्धित शोध आलेखों को छोड़कर बाल साहित्य की ओर कैसे आकर्षित हुए?

**डॉ. शुक्ल** : यह एक लम्बी कहानी है। मैं समाजशास्त्र का विद्यार्थी रहा हूँ। क्राइस्ट चर्च कालेज, कानपुर और इसके बाद बुन्देलखण्ड कालेज, झाँसी में समाजशास्त्र पढ़ाता था। आरम्भ से ही मेरी रुचि नट, कंजर, बेड़िया, हबूड़ा, कालबेलिया आदि पूर्व-अपराधी जनजातियों में थी। क्राइस्ट चर्च कालेज, कानपुर से एम.ए. करने के बाद मैंने पूर्व-अपराधी जनजातियों पर शोध कार्य आरम्भ किया। सर्वप्रथम मैंने 'कबूतरा' पूर्व-अपराधी जनजाति पर शोधकार्य किया और इस पर अनेक आलेख तैयार किये। विख्यात हिन्दी साहित्यकार मैत्रेयी पुष्पा का उपन्यास 'अल्मा कबूतरी' मेरे नोट्स का औपन्यासिक स्वरूप है। कबूतरों के बाद मैंने मोघिया, कुचबन्दिया, बाघरी आदि पूर्व-अपराधी जनजातियों पर शोधकार्य किया।

पूर्व-अपराधी जानजातियों का अध्ययन करते समय मैंने देखा कि इनमें सामान्य चोरी से लेकर हत्या तक के विवादों का फैसला पंचायत में किया जाता है। इस पंचायत में आरोप लगाने, सफाई देने और सुझाव देने का कार्य लोककथाओं के माध्यम से किया जाता था। मैंने ये लोककथाएँ संकलित की और इनमें से कुछ लोककथाएँ नंदन, पराग, बालभारती आदि में भेज दी। यहाँ इनका प्रकाशन आरम्भ हो गया। बाद में इन लोककथाओं का संकलन 'मोघिया लोक कथाएँ' शीर्षक से पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुआ। इस प्रकार मेरे बाल साहित्य का लेखन और प्रकाशन आरम्भ हुआ जो अभी तक चल रहा।

**प्रश्न** : बाल साहित्य आपकी पहली प्रकाशित रचना कौन-सी है? इसका प्रकाशन कब और कहाँ से हुआ?

**डॉ. शुक्ल** : मैंने एक बाल कहानी लिखी थी–सागर और हंस। यह कहानी विख्यात बाल पत्रिका 'नंदन' में अक्टूबर, 1986 में 'बड़ा कौन' शीर्षक से प्रकाशित हुई।

**प्रश्न** : आपने बाल साहित्य का ही चयन क्यों किया? कृपया इस सम्बन्ध में विस्तार से बताइये।

**डॉ. शुक्ल** : पूर्व-अपराधी जनजातियों पर शोध कार्य आरम्भ करने के बाद मैंने कहानी, कविता आदि लिखना बन्द कर दिया था। बस केवल शोध आलेख लिखता था। ये आलेख मुख्य रूप से शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित होते थे, जिनका सरकुलेसन बहुत कम था। नंदन में 'बड़ा कौन' के प्रकाशन के बाद मुझसे अनेक बाल साहित्यकारों ने सम्पर्क किया, बधाई दी और इसी प्रकार की अन्य बाल कहानियाँ लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। मुझे प्रोत्साहित करने वाले बाल साहित्यकारों में जय प्रकाश भारती, श्री हरिकृष्ण देवसरे जैसे बाल साहित्यकार भी थे। कुछ समय बाद मैंने चिल्ड्रेन्स बुक ट्रस्ट ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'बाल साहित्य लेखक प्रतियोगिता' में भाग लेना आरम्भ किया। इस संस्था से मेरी बाल कहानियाँ, बाल कविताएँ, बाल एकांकी, बालोपयोगी लेख तथा 'लेसर' और वन्य जीवों पर पुस्तकें पुरस्कृत हुईं और इसी संस्था द्वारा प्रकाशित भी हुई। इससे मुझे अखिल भारतीय स्तर पर पहचान मिली। यहाँ उल्लेखनीय बात यह है कि बाल साहित्य के साथ ही समाजशास्त्र और पूर्व-अपराधी जनजातियों पर लेखन कार्य चलता रहा।

**प्रश्न** : नन्हें सम्राट में प्रकाशित बाल धारावाहिक 'वृक्ष कथा' लगभग 27 वर्षों से प्रकाशित हो रहा है। इसकी प्रेरणा आपको कहाँ से मिली ? तथा इसमें आपने बच्चों को कौन-सा संदेश देने का प्रयास किया?

**डॉ. शुक्ल** : 'वृक्ष कथा' भारत का दूसरा सबसे बड़ा लोकप्रिय बाल धारावाहिक है। इसका शुभारम्भ नन्हें सम्राट के प्रवेशांक (मई, 1988) से हुआ था और पहली कहानी 'तिलस्मी कमल' थी। वृक्ष कथा मुख्य रूप से एक उद्देश्यपूर्ण फैन्टशी है। इसमें बच्चों के मनोरंजन के साथ ही नैतिक शिक्षा भी है। 'वृक्ष कथा' में बच्चों को यह बताने का प्रयास किया गया है कि बुरे काम का बुरा परिणाम होता है तथा कोई भी कार्य असंभव नहीं है।

**प्रश्न** : आपने 'वृक्ष कथा' के साथ ही देव-दानवों, परियों आदि की कहानियाँ भी लिखी हैं। वर्तमान विज्ञान के युग में इन काल्पनिक कहानियों की उपयोगिता स्पष्ट करें।

**डॉ. शुक्ल** : कल्पना को यथार्थ से अलग नहीं किया जा सकता है। इससे रोबोट के उदाहरण द्वारा सरलता से समझा जा सकता है। चेकोस्लोवाकिया के साहित्यकार कॉरेल चापेक ने अपने एक नाटक में मशीन मानव अर्थात् रोबोट को पात्रों के रूप में प्रस्तुत किया था। इसके बाद रोबोट पर आधारित फिल्में बनीं। इन सबने दुनिया भर के वैज्ञानिकों का ध्यान आकर्षित किया और वे वास्तविक रोबोट बनाने में जुट गये। इस कार्य में उन्हें सफलता

मिली। वर्तमान समय में तो ऐसे-ऐसे रोबोट तैयार कर लिये गये हैं जो मानव जैसे कार्य करने में सक्षम हैं।

**प्रश्न** : आपको सूचनात्मक बाल साहित्य का प्रवर्तक कहा जाता है। सूचनात्मक बाल साहित्य क्या है? और इसका विचार आपके मस्तिष्क में कैसे आया?

**डॉ. शुक्ल** : मैंने सूचनात्मक बाल साहित्य पर एक शोधपत्र तैयार किया था। यह 'साक्षात्कार' के अंक अप्रैल, 2013 में प्रकाशित हुआ। इस आलेख में मैंने सूचनात्मक बाल साहित्य की अवधारणा को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। 'सूचनात्मक बाल साहित्य' का आधार यथार्थ पर आधारित तथ्य और जानकारियाँ तथा विज्ञान हैं। यहाँ पर विज्ञान का तात्पर्य भौतिक विज्ञान अथवा रसायन विज्ञान जैसे प्राकृतिक विज्ञानों तक से नहीं है, बल्कि इसे विस्तृत अर्थों में लिया गया है। विस्तृत अर्थों में विज्ञान को 'वैज्ञानिक पद्धतियों से प्राप्त क्रमबद्ध ज्ञान' के रूप में समझना चाहिए। इसका उपयोग बाल कहानियों, बाल नाटकों, बाल उपन्यासों, बालोपयोगी आलेखों आदि में सफलतापूर्वक किया जा सकता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि तथ्यों पर आधारित, वैज्ञानिक पद्धतियों से प्राप्त ज्ञान और जानकारियों से युक्त बाल साहित्य सूचनात्मक बाल साहित्य है। इसमें बालगीतों और बाल कहानियों से लेकर बाल उपन्यासों तक की रचना की जा सकती है। यहाँ पर यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि जिस प्रकार कल्पना पर आधारित बाल साहित्य में थोड़ा-बहुत यथार्थ भी होता है, उसी प्रकार यथार्थ तथ्यों और विज्ञान पर आधारित सूचनात्मक साहित्य में कल्पना का अंश भी होता है।''

हिन्दी साहित्य में प्रचलित भ्रामक तथ्यों के कारण मैंने सूचनात्मक बाल साहित्य की आवश्यकता अनुभव की। 'नारी की झाँई परे अंधा होत भुजंग', 'चंदन विष व्यापत नहीं लिपटे रहत भुजंग', 'पक्षी घोंसले में विश्राम करते हैं या सोते हैं', 'कोयल (मादा) की आवाज बड़ी मधुर होती है' आदि भ्रामक तथ्य हैं। इस प्रकार के भ्रामक तथ्यों को केवल सूचनात्मक बाल साहित्य के द्वारा ही दूर किया जा सकता है।

**प्रश्न** : आपने बहुत कम समय में बाल साहित्य के क्षेत्र में सफलता प्राप्त की है। ऐसा किस प्रकार सम्भव हुआ?

**डॉ. शुक्ल** : सामान्यतया साहित्यकार, विशेष रूप से बाल साहित्यकार बहतु कम अध्ययन करते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उनके साहित्य में परिपक्वता और नये विषयों की कमी रहती है। वे पारम्परिक विषयों–तितली, तोता, चूहा, बिल्ली, मम्मी, पापा, दादा, दादी, नानी, गुड़िया जैसे विषयों तक सीमित हो जाते हैं। इसके साथ ही उनकी रचनाओं में भ्रामक तथ्य आ जाते हैं, जो साहित्य में विकृति उत्पन्न करते हैं।

मैं आरम्भ में विज्ञान का छात्र रहा। इसके बाद समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, हिन्दी साहित्य आदि का अध्ययन किया। सुपरकंडक्टिविटी, मैगलेव, लेसर जैसे विषयों पर लेख एवं पुस्तकें लिखीं। जलीय सरीसृप कोश, मोलस्क कोश, उभयचर कोश, मार्जार कोश, क्रस्टेशिया कोश, भारतीय मत्स्य कोश, जलचर कोश जैसे विश्वकोश तैयार किये। इससे मेरी जानकारियाँ बढ़ी और मैंने इन जानकारियों का अपने बाल साहित्य में उपयोग किया। इन सबका मेरी सफलता से सीधा संबंध है।

**प्रश्न** : आपने बाल साहित्य की अनेक विधाओं पर कलम चलाई है तथा बाल उपन्यास, बाल धारावाहिक, बाल कहानी, बाल कविता, किशोर कविता, शिशुगीत, बाल एकांकी, बालोपयोगी आलेख आदि लिखे हैं। इनमें से कौन सी विधा में आप अपने को सर्वाधिक सफल मानते हैं तथा कौन-सी विधा आपको सर्वाधिक पसन्द है?

**डॉ. शुक्ल** : बाल साहित्य की किस विधा में मैं सर्वाधिक सफल हूँ? यह एक जटिल प्रश्न है। इसका उत्तर तो मेरे पाठक ही दे सकते हैं। एक साहित्यकार का यह मनोविज्ञान होता है कि उसकी अपनी लिखी हुई बाल कविता हो या बाल उपन्यास, उसे सब कुछ अच्छा लगता है। वह अपनी सर्वोत्तम कृति अथवा सर्वाधिक सफल विधा का निर्णय नहीं कर सकता है। फिर भी मुझे अपनी बाल कविताएँ बहुत अच्छी लगती हैं। बच्चे जब मेरी कविताएँ पढ़ते हैं अथवा गाते हैं तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। कुछ राज्यों के स्कूलों के पाठ्यक्रमों में भी मेरी कविताएँ ली गयी हैं। इस प्रकार आप बाल कविता को मेरी सर्वाधिक पसन्द की विधा मान सकते हैं।

**प्रश्न** : बाल साहित्य में सामान्यतया नैतिक शिक्षा पर बल दिया जाता है। कुछ बाल साहित्यकारों ने बच्चों का मनोरंजन करने वाले साहित्य का भी सृजन किया है। आपके अनुसार बाल साहित्य का उद्देश्य क्या है?

**डॉ. शुक्ल** : हिन्दी में अभी तक बच्चों की आयु के अनुसार साहित्य सृजन आरम्भ नहीं हुआ है। उदाहरण के लिए बाल कविता को लिया जा सकता है। बाल कविता तीन प्रकार की होती है–1. शिशुगीत, 2. सामान्य बाल कविता,

और 3. किशोर कविता। शिशुगीत ठाई वर्ष से पाँच-छह वर्ष तक के बच्चों के लिए, बाल कविता छह-सात वर्ष से लेकर बारह वर्ष तक के बच्चों के लिए, किशोर कविता तेरह वर्ष से अधिक आयु के बच्चों के लिए होती है।

बाल कविता का प्रमुख तत्व अथवा उद्देश्य मनोरंजन है। यह तीनों प्रकार की कविताओं में होना अनिवार्य है। शिशुगीतों में केवल मनोरंजन होता है। बाल कविताओं में मनोरंजन के साथ ही नैतिक शिक्षा भी दी जा सकती है, किन्तु नैतिक शिक्षा हमेशा अप्रत्यक्ष रूप से दी जानी चाहिए। इसके साथ ही इसमें थोड़ी बहुत तथ्यपरक जानकारियाँ भी दी जा सकती हैं। किशोर कविता में कुछ गंभीर विषयों को लिया जा सकता है, किन्तु इसमें भी मनोरंजन आवश्यक है। यह मनोरंजन किशोरों के मानसिक धरातल को ध्यान में रखकर होना चाहिए। इसमें भी अप्रत्यक्ष रूप से नैतिक शिक्षा दी जा सकती है। इसके साथ ही किशोर कविता में तथ्यपरक वैज्ञानिक जानकारियाँ दी जा सकती हैं। इस प्रकार यदि बाल साहित्य का गंभीरता से अध्ययन किया जाये तो इसके तीन उद्देश्य स्पष्ट हो जाते हैं– 1. मनोरंजन, 2. नौतिक शिक्षा, और 3. तथ्यपरक वैज्ञानिक जानकारियाँ। मैंने तथ्यपरक वैज्ञानिक जानकारियों से युक्त बाल साहित्य को सूचनात्मक बाल साहित्य का नाम दिया है।

**प्रश्न** : शुक्ल जी! अब अंतिम प्रश्न, आप वर्तमान समय के सर्वाधिक सफल बाल साहित्यकार हैं। आप अपने जीवन से सम्बन्धित कोई ऐसी जानकारी दीजिए जो बच्चों के लिए प्रेरणाप्रद हो।

**डॉ. शुक्ल** : मैं बचपन से ही जीवन को एक चुनौती मान रहा हूँ। मेरा यह भी मानना है कि इन चुनौतियों का हँसकर साहस के साथ सामना करना चाहिए। इससे जीवन की राह आसान हो जाती है। मेरे पिता श्री मंगली प्रसाद शुक्ल बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाने के कट्टर विरोधी थे। उनका मानना था कि अंग्रेजी माध्यम वाले बच्चे अनुशासनहीन हो जाते हैं। इसीलिए मेरा एडमिशन कानपुर के सदर बाजार जूयिर हाईस्कूल में करा दिया गया। यहाँ कक्षा 6 से अंग्रेजी की पढ़ाई आरम्भ हुई। पहले वर्ष अंग्रेजी समझ में नहीं आयी और दूसरे वर्ष अंग्रेजी का कोई शिक्षक स्कूल में नहीं रहा। तीसरे वर्ष अर्थात् कक्षा 8 में प्रधानाध्यापक महोदय ने बच्चों को अंग्रेजी पढ़ायी, क्योंकि बोर्ड की परीक्षा थी, किन्तु कार्यभार अधिक होने के कारण वह अधिक कक्षाएँ नहीं ले सके। किसी तरह कक्षा 8 पास की और मारवाड़ी कालेज में प्रवेश लिया। यहाँ विज्ञान के साथ अंग्रेजी भी पढ़ी, किन्तु नींव कमजोर होने के कारण न तो अंग्रेजी समझ में आयी न विज्ञान। किसी तरह हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट पास हो गया और क्राइस्ट चर्च कालेज आ गया। क्राइस्ट चर्च कालेज में पढ़ना मेरा स्वप्न था जो साकार हो गया, किन्तु मुझे विज्ञान छोड़ना पड़ा।

क्राइस्ट चर्च कालेज में पढ़ाई अंग्रेजी माध्यम से होती थी, अतः मेरी क्या स्थिति होगी? क्या अनुमान लगा सकते हैं। पिताजी का स्वर्गवास हो चुका था। माँ को मेरी अंग्रेजी पढ़ने में कोई आपत्ति नहीं थी, अतः मैं अपनी पूरी क्षमता के साथ अपनी कालेज की पढ़ाई के साथ ही अंग्रेजी के अध्ययन में लग गया। अंग्रेजी अखबार पढ़ता, अंग्रेजी पत्रिकाएँ पढ़ता, अंग्रेजी फिल्में देखता और अपने मित्रों के साथ अधिक से अधिक अंग्रेजी में बातें करता। इस तरह मैंने 1969 में बी.ए. और 1971 में एम.ए. की परीक्षा पास कर ली। अब आया असली परीक्षा का समय। 21 जुलाई, 1971 को क्राइस्ट चर्च कालेज के समाजशास्त्र विभाग में मेरी नियुक्ति प्रवक्ता पद पर हो गई। मैं इस परीक्षा में भी सफल रहा और मैंने बी.ए. और एम.ए. के छात्रों को अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाया। अब अंग्रेजी के प्रति मेरा भय पूरी तरह समाप्त हो चुका था। लेखक बनने के बाद मैंने सूचनात्मक बाल साहित्य पर अनेक पुस्तकें और लेख लिखे। इतना ही नहीं, मैंने अनेक विश्वकोश भी तैयार कर डाले। इन सबमें मुझे अंग्रेजी से बहुत सहायता मिली। मेरा विश्वास है कि विश्व में कोई भी कार्य कठिन नहीं होता। बस, ठान लो तो सब हो जाता है।

❖❖❖❖❖